अजातशत्रु कूणिक

वैभारगिरी पर्वत की तलहटी में सुन्दर बगीचों के बीच स्थित रानी चेलना के महल के अन्दर रात के अन्तिम प्रहर में हलचल मची हुई थी। दासियाँ इधर-उधर टहल रही थीं। रानी ने अभी-अभी पुत्र को जन्म दिया है। पुत्र का मुँह देखते ही रानी का हृदय धक्-धक् कर उठा। उसने दासी से कहा–

रानी के आदेश से दासी नवजात बालक को महल के पिछवाड़े कूड़े के ढेर पर डालकर वापस आ रही थी, तभी प्रातः भ्रमण के लिए निकले महाराज श्रेणिक टहलते हुए उधर पहुँचे। एक औरत को दबे पाँव महल की तरफ वापस जाते देख जोर से आवाज लगाई–

दासी श्रेणिक की आवाज सुनकर काँप गई।

पास पहुँचकर श्रेणिक ने दासी को पहचान लिया। उसे डाँटकर पूछा तो दासी ने डरकर सब सच-सच बता दिया–

दासी श्रेणिक को कूड़े के ढेर के पास ले गई। श्रेणिक ने लपककर बालक को गोद में उठा लिया। उसका मुँह चूमने लगा। तभी उसकी निगाह रोते हुए बालक की उँगली पर गई–

श्रेणिक शिशु को लेकर सीधा चेलना के महल में पहुँचा और रानी को इस दुष्ट कार्य का उलाहना दिया। रानी बिलखते हुए बोली–

कुछ दिन पश्चात् श्रेणिक पुत्र से मिलने चेलना के महल आया, देखा कि बालक की कटी उँगली में मवाद पड़ गया है। बच्चा पीड़ा से रोता जा रहा है। उसने तुरन्त मुँह से चूस-चूसकर उसकी उँगली का मवाद निकाल दिया। रानी चेलना चकित रह गई।

बालक का नाम अशोक चन्द्र रख दिया गया, परन्तु उसकी कटी हुई उँगली के कारण सभी उसे कूणिक* कहकर पुकारने लगे। कूणिक के बाद चेलना के दो पुत्र और हुए जिनका नाम हल्ल-विहल्ल रखा गया। बड़े होने पर तीनों राजकुमारों को गुरुकुल पढ़ने भेज दिया गया।

एक दिन मध्याह्न में भोजन के समय तीनों राजकुमारों के लिए केसर कस्तूरी से बने मोदक के तीन डिब्बे आये। सेवकों ने पहला डिब्बा कूणिक के सामने रखा। बाकी दो डिब्बे हल्ल-विहल्ल कुमार के सामने। कूणिक ने अपना मोदक चखा।

उसने हल्ल-विहल्ल कुमार के डिब्बे में से मोदक चखा।

अगले दिन भी उसने यही अन्तर पाया तो उसने सेवकों से पूछा–

कूणिक ने सोचा–

धीरे-धीरे कूणिक के मन में पिता के प्रति नफरत के भाव उत्पन्न होने लगे। बात-बात पर वह यही देखता कि पिताजी मुझसे नफरत करते हैं और छोटे पुत्रों से प्यार करते हैं।

*कूणिक = कटी हुई उँगली वाला